श्री सरस्वती भुवन शिक्षण संस्था, औरंगाबाद के तत्वावधान में स्थापित शारदा मंदिर कन्या उच्च विद्यालय के शताब्दी महोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में माननीय अध्यक्ष का भाषण।

1. श्री सरस्वती भुवन एजुकेशन सोसायटी औरंगाबाद के तत्वावधान में संचालित शारदा मंदिर कन्या उच्च विद्यालय के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित शताब्दी महोत्सव में आप सबके बीच आकर मुझे बहुत अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। मैं सरस्वती भुवन एजुकेशन सोसायटी को धन्यवाद देती हूँ कि आपने मुझे यहाँ आमंत्रित किया और इस प्रतिष्ठित विद्यालय की युवा छात्राओं एवं उनकी alumni के साथ कुछ समय बिताने एवं उनसे अंतर–संवाद का मौका दिया। विदित हो कि श्री सरस्वती भुवन एजुकेशन सोसायटी की स्थापना सन् 16 मार्च 1915 में हुई थी जिसका उद्देश्य समाज में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना है।

2. यह बड़े गर्व की बात है कि इस समिति ने बहुत पहले बालिका शिक्षा के महत्व को समझा और सन् 1916 में ही औरंगाबाद में शांता मंदिर कन्या पाठशाला की स्थापना की जिसमें मराठी भाषा में शिक्षा दी जाती थी। एक ऐसे रास्ते पर चलकर जिस पर 100 साल पहले कोई–कोई ही चलता था, अपनी सक्रियता दूरदर्शिता और दृढ़निश्चय दिखाते हुए आपने छात्राओं की शिक्षा के लिए विद्यालय की स्थापना का कार्य किया। यह वास्तव में प्रशंसनीय है। उन दिनों में लड़कियों को शिक्षित करने की बात सोचना भी बड़े हिम्मत का काम था और आज आप अपने प्रयासों से हमारे समाज में बदलाव लाने में सफल हुए हैं। आपकी प्रतिबद्धता अनेक लोगों के लिए प्रेरणा बनी है और मैं आपके साहस और दृढ़संकल्प की सराहना करती हूं। इस संस्थान के सफलतापूर्वक 100 वर्ष पूरे करने पर आप सभी को ढेर सारी बधाइयां।

3. यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि इस समिति के तत्वावधान में इस विद्यालय के अतिरिक्त 18 से भी अधिक विद्यालय, 2 सीनियर कॉलेज, 9 जूनियर कॉलेज और 2 हॉस्टल

संचालित हो रहे हैं। एक विशेष बात यह भी है कि इन्होंने शिक्षा के माध्यम के रूप में मराठी भाषा को भी अपनाया है जिससे भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं का सरंक्षण एवं संवर्धन होता है।

4. शिक्षा एक बहुमूल्य उपहार है और स्कूल में हमें शिक्षा के जो अवसर प्राप्त होते हैं, उनका हमारी जिन्दगी पर गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारे बच्चों के जीवन में स्कूली शिक्षा का समय बहुत खास होता है क्योंकि इस समय जिन संस्कारों के बीज बोये जाते हैं, वह समय आने पर अंकुरित होते हैं और एक बच्चा परिपक्व वयस्क बनता है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि विद्यालय स्तर पर ही सही संस्कार दिए जाएं। इन संस्कारों में सद्विचार, बड़ों का आदर, अपनी संस्कृति का सम्मान, समय की पाबंदी, किताबें पढ़ना, पर्यावरण की देखभाल, स्वास्थ्य और सफाई के प्रति जागरूकता, सामाजिक संवेदनशीलता और मानवता के गुण इत्यादि शामिल हैं। आप में से जिन लोगों ने इस स्कूल से शिक्षा प्राप्त की है उनके मन में आज भी बड़े होने के उन सालों की यादों की अमिट छाप होगी जिनसे उस मुकाम की नींव पड़ी, जिस पर आज आप हैं। भारत रत्न Nelson Mandela ने भी कहा है कि 'Education is the most powerful weapon we can use to change the world.'

5. अच्छी शिक्षा के लिए चार चीजें बहुत महत्वपूर्ण हैं। पहली पहुंच (Access), दूसरी समता (Equity), तीसरी गुणवत्ता (Quality) और चौथी चीज है प्रासंगिकता (Relevance)। हर व्यक्ति, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष उनके लिए शिक्षा affordable होनी चाहिए। न केवल affordable होना चाहिए बल्कि सभी को समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो, जो पूरे विश्व में उपयोग में लाई जा सके। शिक्षा के पाठ्यक्रम को समय, स्थानीय परिस्थितियों, संस्कृति एवं सामयिक जीवन शैली के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। अध्ययन हेतु विषयों का चयन ऐसा हो, जो विद्यार्थियों के करियर को संपुष्ट (nourish) करने के साथ–साथ उनमें समुचित ज्ञान और उसके प्रति अभिरूचि (Interest) पैदा कर सके।

6. इन बातों को ध्यान में रखते हुए ही, इस संस्थान ने बदलते समय के साथ professional और technical skills को अपनाया है एवं पहली कक्षा से लेकर पी.एच.डी. तक शिक्षा का प्रबंध किया है। परंतु, यह भी ध्यान रखा जाए कि आधुनिक तकनीक के साथ हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित एवं संवर्धित करना हमारा प्रथम लक्ष्य होना चाहिए। इसी तर्ज पर यह संस्था निरंतर काम कर रह है एवं यह प्रत्येक वर्ष में 25 हजार से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करती है। यह गर्व का विषय है कि इस संस्था को वर्ष 2000 में पूरे महाराष्ट्र में बेहतरीन शिक्षा प्रदान करने के लिए सम्मानित किया गया है। गुरूकुल पद्धति से शिक्षा प्राप्त करना हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति का हिस्सा रहा है। यह खुशी की बात है कि यह संस्थान संगीत और नाटक अकादमी की एक ग्रामीण शाखा खोलने जा रहा है जो गुरूकुल शिक्षा पद्धति पर आधारित होगा। संस्थान का भविष्य में एक ब्यॉएज हॉस्टल एवं आडिटोरियम बनाने का प्रस्ताव सराहनीय है।

7. जब भी मैं स्त्री–शिक्षा या नारी मुक्ति की बात करती हूं तो मेरे मन में सबसे पहले सावित्रीबाई फुले का स्मरण हो आता है जिन्होंने उन्नीसवीं सदी में सती प्रथा, बाल–विवाह और विधवा विवाह निषेध जैसी कुरीतियों के विरुद्ध अपने पति एवं समाज–सुधारक ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) के साथ मिलकर जोरदार आवाज़ उठाई और बालिकाओं एवं महिलाओं के कल्याण के लिए कार्य किया। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए 18 स्कूल खोले। वे महिलाओं को कहती थीं– ''जाओ जाकर पढ़ो–लिखो, बनो आत्मनिर्भर, बनो मेहनती। ज्ञान के बिना सब खो जाता है, ज्ञान के बिना हम जानवर बन जाते हैं, इसलिए खाली न बैठो, जाओ, जाकर शिक्षा लो।'' ज्योतिबा फुले जी कहते थे–''माताएं जो संस्कार बच्चों पर डालती हैं, उसी में उन बच्चों के भविष्य के बीज होते हैं, इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक है।''

8. महिला उत्थान के संदर्भ में ही महर्षि कर्वे के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता जिन्होंने न केवल महिला कल्याण के लिए विधवा विवाह का समर्थन किया, बल्कि महिलाओं की शिक्षा के लिए पुणे में पहला महिला विद्यालय स्थापित किया जो बाद में विश्वविद्यालय बना। गांवों में शिक्षा के प्रचार के लिए उनके द्वारा स्थापित ''महाराष्ट्र ग्राम प्राथमिक शिक्षा समिति'' ने लगभग 40 प्राथमिक विद्यालय खोले। सभी को शिक्षित करने के साथ–साथ उनका विशेष ध्यान महिलाओं, बालिकाओं एवं विधवाओं का सम्पूर्ण उत्थान करने की ओर था। भारत रत्न के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित महर्षि कर्वे सच्चे अर्थों में एक मनीषी थे जिन्होंने आजीवन शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लक्ष्य को ध्यान में रखकर कार्य किया। उनका एक सपना महिलाओं के लिए एक विश्वविद्यालय की स्थापना करना था, जो बाद में साकार हुआ जिसके लिए उन्होंने 70 वर्ष की अवस्था में भी धन–संग्रह हेतु देश–विदेश की यात्राएं कीं। पुणे से मुम्बई स्थानांतरित हुआ श्रीमती नत्थीबाई दामोदर ठाकरसी विश्वविद्यालय इसका जीता–जागता प्रमाण है। ऐसी महान विभूतियों ने महाराष्ट्र को शिक्षा और संस्कृति का केन्द्र बनाया है।

9. लड़कियों की शिक्षा का हमेशा से ही विशेष महत्व रहा है। Noted writer Brigham Young had rightly said, "You educate a man; you educate a man. You educate a woman; you educate a generation." तात्पर्य यह है कि एक स्त्री को शिक्षित करने से कई पीढ़ियां शिक्षित होती हैं। अतः, उनकी शिक्षा–दीक्षा की व्यवस्था करना हमारी प्राथमिकता में होना चाहिए। मेरा मानना है कि उचित शिक्षा एवं अनुकूल परिवेश से बालिकाएं/महिलाएं किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ हैं। किसी भी देश के विकास एवं उन्नति में पुरुषों के साथ महिलाओं की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। महिलाएं भी पुरुषों की तरह विभिन्न विभागों में अपनी सेवाएं देकर राष्ट्र निर्माण का कार्य कर रही हैं। They are equally diligent, able and staunch performers.

10. इस शताब्दी वर्ष में यहां आयोजित सम्मेलन में विद्यालय के वर्तमान छात्राओं के साथ उनके alumni का interaction हो रहा है। Alumni के अनुभवों से वर्तमान अध्ययनरत विद्यार्थीगण को बहुत–कुछ सीखने को मिलेगा। नए और पुराने का मिलन सदैव प्रेरणादायी होता है और alumni द्वारा उनके अनुभवों के बखान से खुशियों का एक समां बंध जाता है।

11. प्यारे विद्यार्थियो! मुझे इस बात की खुशी है कि इस विद्यालय ने बड़ी ख्याति अर्जित की है और इस विद्यालय से हमें अनुशासित और प्रतिभाशाली छात्र मिलते रहे हैं। उन छात्राओं ने सामाजिक, नैतिक और आध्यत्मिक मूल्यों की उनकी दी गई शिक्षा को आत्मसात् किया है। विद्यालय का भवन भी काफी स्वच्छ एवं आकर्षक है एवं विद्यार्थियों को साफ–सफाई रखने की प्रेरणा भी देता है। इस विद्यालय ने माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा चलाए गए स्वच्छता अभियान में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। स्वच्छ वातावरण में ही स्वच्छ मन का निवास होता है तथा स्वच्छ मन ही विचारों को शुद्ध रखते हुए अपने कार्य में भी शुचिता का संचार करता है।

12. जहां तक भारत की साक्षरता का प्रश्न है, आजादी के बाद से इसमें निरंतर बढ़ोत्तरी हुई है। उदाहरण के लिए जहां सन् 1951 में भारत की साक्षरता दर 18.33 प्रतिशत थी वह वर्ष 2011 में बढ़कर 73 प्रतिशत हो गई है और महिला साक्षरता में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है। वर्तमान में महिला साक्षरता दर 64.6 प्रतिशत है जबकि पुरुष साक्षरता दर 80.9 प्रतिशत है। परंतु, अभी भी महिलाओं की शिक्षा के लिए बहुत–कुछ करना बाकी है। वर्तमान सरकार ने इसी बात को ध्यान में रखकर ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' और ''सुकन्या समृद्धि कार्यक्रम'' का शुभारंभ किया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य जागरूकता उत्पन्न करना और बालिकाओं के जन्म और शिक्षा को प्रोत्साहित करना है।

13. स्वामी विवेकानंद के शब्दों में 'शिक्षा वह जानकारी नहीं है जो हमारे दिमाग में डाली जाती है और जिसे समझे बिना ही हम अपना जीवन बिता दें। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें विचारों के

समावेश से मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और जीवन निर्माण होता है।' Intelligence plus character is the real meaning of education.

14. सही और उचित शिक्षा से ही हमारी बालिकाओं का सम्पूर्ण विकास होगा और वह एक सशक्त स्वावलम्बी महिला बनेंगी और यही महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य है। आप सब नोबेल पुरस्कृत मलाला युसुफजई के नाम से भलीभांति परिचित होंगे, जिसने 11 साल की छोटी उम्र से लड़कियों को शिक्षा के समान अवसर के लिए अपनी आवाज़ उठाई। इस परिप्रेक्ष्य में, मैं यह कहना चाहूंगी कि आप सभी छात्राएं, जो इस प्रतिष्ठित विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं, को संकल्प करना चाहिए कि पूर्ण निष्ठा और लगन से पढ़कर आप जीवन में आगे बढ़ेंगी और परिवार, समाज और देश हित में काम करेंगी।

15. आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने अपनी संसद में छात्रों तथा युवाओं, और विशेषकर समाज के सुविधाविहीन वर्गों के बच्चों के लाभार्थ एक बालकक्ष की स्थापना की है। बाल कक्ष में चित्रकला प्रतियोगिता, कहानी सुनाने, पेंटिंग, सांस्कृतिक कार्यक्रम और कठपुतली का खेल जैसी अनेक गतिविधियां होती रहती हैं। आप सब का बाल कक्ष में स्वागत करके मुझे बहुत खुशी होगी। मैं आपको संसद और संसद संग्रहालय में आने का निमंत्रण देती हूं। मुझे विश्वास है कि यह आप सबके लिए बहुत ज्ञानप्रद अनुभव होगा। आप शायद जानते होंगे कि हमारे यहां एक संसद संग्रहालय है जो लोगों को संसद के करीब लाता है और वहां संसदीय गतिविधियों की एक श्रेष्ठ झलक देखने को मिलती है।

16. मैं एक बार फिर श्री सरस्वती भुवन शिक्षण संस्था, औरंगाबाद के प्रबंधन मंडल को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मुझे देश की भविष्य इन नौनिहालों एवं बालिकाओं से बातचीत करने का अवसर प्रदान किया। मैं कहना चाहूंगी कि किसी भी संस्था के लिए सौ वर्ष पूर्ण करना जश्न मनाने का अवसर होता है। इसके साथ ही यह अवसर अपनी कमियों और अपनी उपलब्धियों, यदि कोई हों, पर दृष्टिपात करने का होता है। मैं शांता मंदिर उच्च विद्यालय को

भी पिछले सौ वर्ष के दौरान बालिकाओं में शिक्षा के प्रचार–प्रसार और इसे लोकप्रिय बनाने की सराहनीय उपलब्धि के लिए बधाई देती हूं। वास्तव में यह राष्ट्र की और विशेषकर औरंगाबाद के आस–पास के क्षेत्रों के लोगों की महान सेवा है। **शास्त्रों में कहा गया है–** ''संस्कृताः स्त्रीः पराशक्ति'' **(An enlightened women is a source of infinite strength).** अतः, मैं यहां उपस्थित सभी छात्राओं का आह्वान करती हूं कि आप अध्ययन, चिंतन, मनन कर अपने–आपको संस्कृता बनाएं, खूब ज्ञानार्जन करें। साथ ही, यह कामना भी करती हूं कि आप सफलता के नए कीर्तिमान गढ़ें, अपने सभी भावी प्रयासों में सफल हों और आपका भविष्य उज्ज्वल हो।

17. हमारे पूर्व वैज्ञानिक राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की इन बातों से मैं अपनी बात समाप्त करती हूं:–

"The purpose of education is to make good human beings with skill and expertise. Enlightened human beings can be created by teachers".

धन्यवाद, **Jai Hind.**

———